आखिर क्यों...

मैं एक दिन बाज़ार गया
वहाँ एक आदमी ने मुझको मारा
फिर मैं गोल-गप्पे की दुकान गया,
वह भी मुझको मारने लगा
फिर एक दिन मैं समोसे की दुकान गया
वहाँ उसने भी मुझे मारा
फिर मैं एक घर में गया
वहाँ उसने भी मुझे मारा
आखिर लोग मुझे मारते क्यों हैं?
क्योंकि मैं एक कुत्ता हूँ।

—आरती, पाँचवी, धामीखेड़ा, उ. प्र.

—धुरकुट्टा, म. प्र.

कितना कुछ हो रहा था

एक घर था। उसमें एक बूढ़ा रहता था। वह बूढ़ा एक दिन सब्ज़ी लेने जा रहा था। फिर पानी गिरने लगा तो उसने छाता निकालकर लगा लिया। फिर बारिश रुक गई। और वह सब्ज़ी लेने जाता रहा। उसके घर के सामने एक लाल कलर का पेड़ था। और वह बहुत सुन्दर था और उसके पास हरी-हरी घास थी। वह घास बहुत अच्छी थी। और वहाँ एक नदी थी। नदी का पानी सूख-सूख गया था। और मछलियाँ पेड़ पर लटकने की कोशिश कर रही थीं। मगर वो गिरती जा रही थीं। और वो घास भी तोड़ लाईं। फिर उनके सामने एक फूल का पेड़ था। और कमल का फूल भी था और उसके ऊपर तितलियाँ गुनगुना रही थीं। दो पेड़ भी थे। उनमें पके हुए आम भी लगे थे। और हरी-हरी पत्तियाँ भी थीं। और फिर एक दिन बारिश हुई तेज़। और फिर रुक गई तो एक बहुत बड़ा इन्द्रधनुष निकला। सात रंगों का नीला, पीला, हरा, गुलाबी, लाल ऐसे ही रंगों का। और फिर छोटे-छोटे आदमी निकले – बादल के आदमी। बहुत छोटे-छोटे आदमी। और फिर रात हो गई तो चाँद-सितारे निकल आए।

—आसमां बानो, चौथी, मजरा, टीकमगढ़, म. प्र.

—मंगल सिंह, आठ साल, सवाईमाधोपुर, राजस्थान

ले चली भाई...

ले चली भाई ले चली — सबकी प्यास बुझाने
मक्खी पानी ले चली — अपनी प्यास बुझाने

—नंदिनी, चौथी, होशंगाबाद, म. प्र.

—पल्लवी सोनी, पाँचवी, टीकमगढ़, म. प्र.

मेवे का गोदाम

ऊपर मेवे का गोदाम
नीचे रहते चूहेराम
करते हैं चोरी का काम
खाते काजू और बादाम
जब आएगी बिल्ली रानी
मर जाएगी उसकी नानी

—दिव्या, चौथी, कानपुर, उ. प्र.

बहुत पहले...

एक बार ना जब हम छोटे थे.... बहुत छोटे थे, नन्हे से। तो मछली शहर में पालने में सो रहे थे। तो, बीच में एक साँप (टीवी के तार जितना लम्बा था।) बहुत मोटा था, बहुत मोटा.... जितनी मोटी रोटी फूलती है। पालने में छुपके से आया। और पालने की रस्सी पर बैठ गया – साढ़े पाँच बजे। हम और हरि मामा दौड़कर चले गए तो साँप सड़क पर चला गया। सड़क पर दो किसान जा रहे थे। किसानों ने साँप को खेत में फेंक दिया।

—हीर, 4 वर्ष, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

(हीर ने यह कहानी अपनी नानी को सुनाई।)

— रोहित, छठी, दीपालय स्कूल, दिल्ली.

मेरा पन्ना

चींटी और लड़की

एक लड़की थी और एक लड़का था। दोनों भाई-बहन थे। एक दिन वे स्कूल से आए और भोजन करने लगे। तभी एक चींटी ऊपर से गिरी। लड़के ने उस चींटी को गिलास से ढँक दिया। चींटी उस गिलास में छटपटाने लगी। लड़की ने उस गिलास को हटाया और चींटी को अपनी उँगली पर रखा और हवा में घुमाया। चींटी फिर अपनी जगह पर चली गई। एक दिन लड़की किसी जंगल से जा रही थी। उसके पीछे एक हाथी पड़ गया और उसे खा जाना चाहता था। लड़की नहीं जानती थी कि मेरे पीछे हाथी पड़ गया है। जब लड़की ने पीछे मुड़कर देखा तो वो वहाँ से भागने लगी। तब तक चींटी ने देखा कि उसी लड़की ने मेरी जान बचाई थी। चींटी झट से गई और हाथी के शरीर पर चढ़ गई और काटने लगी।

—हुसने आरा, चौथी, बिहार

—शुभम विश्वकर्मा, सातवीं, भोपाल

बत्तख, कछुआ और मछलियाँ

एक गाँव में एक सुन्दर तालाब था। उस तालाब में ढेर सारी मछलियाँ, कछुए और बत्तखें एक साथ रहती थीं। एक दिन एक बत्तख को बहुत भूख लगी थी तो उसने एक मछली को खा लिया। उसे ऐसा करते देख कछुए ने बत्तख से पूछा, “तुमने मछली को क्यों खाया? वो मेरी दोस्त थी। मैं तुम्हे माफ नहीं करूँगा।” बत्तख बोली, “मेरे प्यारे दोस्त कछुए मुझे माफ कर दो। मैंने जानबूझकर तुम्हारी दोस्त को नहीं खाया।”

लेकिन दिन-ब-दिन एक-एक करके मछलियाँ तालाब से गायब होने लगीं। एक दिन सोनू मछली की माँ ने कछुए से पूछा, “क्या तुमने सोनू को देखा है?” वह गुम हो गया है। कछुए ने कहा, “मैंने सोनू को नहीं देखा।” जल्दी ही तालाब से सारी मछलियाँ एक-एक करके गायब हो गईं। कछुआ बहुत उदास था। उसने सोचा कि अपने दोस्तों के बिना वह उस तालाब में नहीं रहेगा। और कछुआ दुखी मन से दूर किसी तालाब में जाकर रहने लगा।

—इदाया, छठी, बैंगलौर, कर्नाटक

—लालू प्रसाद, 9 साल, हिमाचल प्रदेश